तर्ज- अपनी आंखों में बसाकर
तेरे दरबार के जैसा कोई दरबार नही
मजहबो मिल्लत की यहां कोई भी दीवार नही

1--ये वो दर है जहां चारों वर्ण आते हैं
एक प्रीतम के सभी मिल के गीत गाते है
प्यार ही प्यार यहां पर कोई तकरार नही

2--प्राणनाथ पल में शफा देते हैं बीमारों को
एक सजदे में बख्शते है गुनाहगारो को
होती रहमत की यह बरसात बार बार यहीं

3--वैर नफरत के अन्धेरो से निकाले प्रीतम
ज्ञान दे दे के किये तुमने उजाले प्रीतम
इस हकीकत से किसी को इन्कार नही

4--दौर ये वो है लहू सस्ता महंगा पानी है
वक्त में ऐसे आप आये मेहरबानी है
अंगना को झूठे जहां में कोई करार नही

Nijanand App